ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL**04292**
RNI REG. NO. UPBIL/**2014/66218** **PP. No.- 104-106**
I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- II, Issues-40, YEAR- April-June 2026

भारत में विभिन्न वर्ग एवं सामाजिक गतिशीलता

डॉ0 धनंजय कुमार
सहायक प्राध्यापक– समाजशास्त्र विभाग, आर०पी०एस० कॉलेज, हरनौत, नालन्दा (बिहार) भारत

Received-22.04.2026, Revised-30.04.2026, Accepted-08.05.2026, **E-mail:dhananjay803110@gmail.com**

सारांशः ***भारत में विभिन्न सामाजिक वर्गों का उद्भव और विकास समय की गति के साथ नए रूप में बनता और बदलता रहा है। यह देश के विभिन्न भागों में समान रूप से विकसित नहीं हुआ। चूंकि भारत में इन सामाजिक वर्गों का उदभव सामान्यतः अंग्रेजी शासन के दौरान हुआ, अतः अंग्रेजी शासन की प्रकृति के अनुसार सामाजिक शक्तियों का विस्तार असमान रूप से हुआ और परिणामस्वरूप सामाजिक वर्गों की असमान वृद्धि हुई। हालांकि उपनिवेश काल के पूर्व भी भारतीय समाज में वर्गीय व्यवस्था मौजूद थी, परंतु सामाजिक संरचना में जाति प्रथा का दबदबा था।***

कुंजीभूत शब्द– सामाजिक गतिशीलता, सामाजिक वर्ग, उद्भव, विकास, समय की गति, उपनिवेश काल, वर्गीय व्यवस्था,जाति प्रथा।

भारत में कृषक वर्ग एक बहुत बड़ी जनसंख्या के रूप में विद्यमान है। पुरानी पारंपरिक सामाजिक व्यवस्था में भूमि की खरीद–बिक्री नहीं होती थी। उपनिवेशकाल ने भूमि को एक वस्तु का रूप देकर तथा विभिन्न कानूनों द्वारा कई वर्गों को जन्म दिया। ब्रिटिश औपनिवेशिक शासकों की कृषि नीतियां अन्य घटकों के साथ कृषि में परिवर्तनों के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण मानी जाती हैं। स्वतंत्रता के समय, मध्यस्थ वर्ग के पास भूमि के बहुत बड़े भाग थे तथा किसानों के पास बहुत थोड़ी जमीन थी या नहीं थी। सन् 1950 में भूमि सुधार कानून पास हुआ जिसका उद्देश्य जमींदारों जैसे मध्यस्थों को हटाकर वास्तव में खेती करने वालों को भूमि के स्वामित्व के अधिकार देना था। इसके फलस्वरूप नए वर्गों का गठन हुआ। काश्तकार और बंटाईदार जिन्हें जोत के अधिकार मिले और जो कम दर वाले कर दे रहे थे, काश्तकार जिन्हें स्वामित्व के अधिकार मिले, भू–विहीन जिन्हें हदबंदी से अतिरिक्त जमीन मिली, अनुपस्थित भूस्वामी जो प्रत्यक्ष खेतिहर बने। इनमें से कई जिनके अब खेत थे; अपने स्रोतों या वित्तीय संस्थाओं से कर्ज के आधार पर प्रगतिशील किसान बने।[1] इस तरह से ऊर्ध्व गतिशीलता उच्च स्तर एवं निम्न स्तर दोनों में पैदा हुई। जहां भूमि सुधार कानून जमींदारों के लिए निम्न सामाजिक गतिशीलता का साधन बना, वहीं काश्तकारों, भूमिहीनों के लिए उच्च गतिशीलता का परिचायक बना। इसके अतिरिक्त, जोतदार भूमि की अधिकतम सीमा निर्धारण के कारण अतिरिक्त जमीन खरीदकर किसान बने। अतः किसान व्यावसायियों अथवा किसानों का एक ऐसा नया वर्ग बना जिसने खेती को एक उद्यम के रूप में चुना।[2] इसके साथ ही अन्य अधिनियमों के पारित होने से भी जमींदारी व्यवस्था को कड़ा झटका लगा। वयस्क मताधिकार एवं पंचायती राज व्यवस्था अधिनियम ने सामाजिक गतिशीलता को नया आयाम दिया। जहां छोटे एवं मध्यम वर्गीय ग्रामीणों को बल मिला, वहीं जमींदारों एवं साहूकारों के बचे खुचे प्रभाव और अधिकारों को गहरी चोट पहुंची।

हरित क्रांति के साथ कृषि के आधुनिक तौर–तरीकों का दौर शुरू हुआ। भूमि की उत्पादकता में वृद्धि होने के अतिरिक्त इन परिर्वतनों का भारतीय कृषि के सामाजिक ढांचे पर प्रभाव पड़ा। हरित क्राति से गांवों में एक नया वर्ग उभर कर सामने आया जिसे प्रगतिशील किसान का नाम दिया गया। इन प्रगतिशील किसानों के पास अधिक भूमि के साथ–साथ ट्रैक्टर, पम्पसेट, पॉवर आदि रखने की समर्थता थी जिससे वे अधिक लाभ कमाने में समर्थ थे। साथ ही हरित क्रांति ने छोटे किसानों को भूमिहीन बनाने के बजाय उन्हें बचे रहने में सहायता की है। नई तकनीक, बेहतर बीजों और अन्य कृषि सामानों के प्रयोग से छोटा किसान अधिक सक्रिय हो उठा है और संकट के समय उसे अपनी जोतों को बड़े किसानों को बेचना नहीं पड़ा है।[3] अमीर एवं भूमिपति और अधिक धनवान हुए तथा कृषि कामगारों की स्थिति में भी बहुत सुधार नहीं हुआ जिसके कारण कृषक वर्गों में राजनीतिक गतिशीलता संपूर्ण भारत में पनपी जो आज भी निरंतर चल रही है।

भारतीय शहरी सामाजिक संरचना गतिशील व्यवस्था के रूप में नजर आती है। आधुनिक औद्योगिकीकरण ने उद्योग, मुक्त व्यापार तथा नए बाजारों की स्थापना से व्यापार और व्यवसाय को नई प्रेरणा दी। इसके फलस्वरूप शहरों की ओर लोगों का आना अत्यधिक एवं तीव्र हो गया। इस कारण ने समग्र सामाजिक वर्गों की प्रकृति को व्यापक रूप से प्रभावित किया। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों की ओर प्रवास और शहरीकरण की बढ़ती गति ने सामाजिक गतिशीलता को उजागर किया। शहरीकरण की संरचना मुख्य चार वर्गों को रेखांकित करती है जो हैं पूंजीपति वर्ग. उद्यमी व्यापारी एवं दुकानदार, व्यावसायिक वर्ग, श्रमिक वर्ग। उद्योगों में असीमित विस्तार के कारण उद्योगपतियों का एक वर्ग आर्थिक रूप से तथा संख्या में सशक्त हो गया। उद्यमी व्यापारी एवं दुकानदार वर्ग शहरों एवं नगरों के विकास के साथ–साथ फले–फूले हैं। ये वर्ग वस्तुओं एवं सेवाओं की आपूर्ति कर समृद्ध बन गए। इसके साथ–साथ शैक्षणिक संस्थाओं की स्थापना तथा व्यावसायिक प्रशिक्षण के द्वारा व्यावसायिक वर्ग का उत्थान और विकास हुआ। इस वर्ग में डॉक्टर, इंजीनियर, वकील, प्रबंधक, प्रशासक, वैज्ञानिक, प्रौद्योगिकीविद् आदि शामिल थे। प्रादेशिक क्षेत्रों के विकास के साथ–साथ इस वर्ग की संख्या और प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई। शहर के चौथे एवं महत्त्वपूर्ण वर्गों में एक वर्ग श्रमिक वर्ग है जिनमें पहले भूमिहीन किसान तथा गरीब शामिल थे। अब हाल के दशकों में उद्योगों का विकास होने से इनकी वृद्धि एवं विकास हुआ है।

पिछड़ा वर्ग तथा सामाजिक गतिशीलता–भारतीय समाज के सामाजिक पदक्रम में ये पिछड़े वर्ग कोई एक इकाई के रूप में नहीं वरन् विभिन्न सामाजिक–आर्थिक परिस्थिति रखने वाले अनेक सामाजिक समूहों से बने हैं। ये वर्ग उन असमर्थताओं और वंचनाओं से ग्रस्त थे जो बहुत पुरानी हैं तथा जिनकी मान्यताओं की उत्पत्ति जाति व्यवस्था में है। पिछड़े वर्ग अनुसूचित जाति एवं जनजाति तथा अन्य पिछड़े वर्गों से बने हैं। अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति भारतीय संविधान की सुपरिभाषित श्रेणियां हैं। अन्य पिछड़े वर्ग सूचीबद्ध और परिभाषित नहीं हैं। अतः व्यक्तियों की इस श्रेणी की समस्याएं व्यापक और जटिल हैं।[4] मंडल आयोग की सिफारिश के बाद सामाजिक तथा शैक्षिक पिछड़ेपन को परिभाषित कर तथा इनके उत्थान के लिए केंद्रीय सेवाओं में आरक्षण की व्यवस्था की गई। अनुसूचित जाति एवं जनजाति के लिए यह व्यवस्था स्वतंत्रता के समय से ही है। स्वतंत्रता के पूर्व गांधी जी और अंबेडकर ने इस दिशा में अनवरत प्रयास किए।

अनुसूचित जातियों में संस्कृतिकरण के माध्यम से सामाजिक गतिशीलता की प्रक्रिया चलती रही है। संस्कृतिकरण के माध्यम से इन लोगों ने अपने रीति–रिवाजों, सांस्कृतिक सिद्धांतों तथा जीवन शैली में अपनी मूल जाति से दोगुनी गति में उच्च दिशा में

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- II, Issues-40, YEAR- April-June 2026

परिवर्तन किया।[5] सामाजिक बदलाव का देशीय और सांस्कृतिक विशिष्ट तरीका मध्यमवर्ती जातियों में भी आर्थिक रूप से समृद्ध और राजनीतिक रूप से जागरूक तबकों ने खूब अपनाया। इसके अलावा, ब्रिटिश शासन के परिणामस्वरूप समाज और संस्कृति का पश्चिमीकरण हुआ है जिसमें विभिन्न स्तरों जैसे प्रौद्योगिकी, विचारधाराओं और संस्थाओं, सिद्धांतों तथा मूल्यों के स्तर पर हुए परिवर्तनों को शामिल किया गया है।[6] पश्चिमीकरण की गतिशीलता की प्रक्रिया को विभिन्न तरीकों ने विशेष गति प्रदान की है। कुछ अनुसूचित जातियों ने अंग्रेजी साम्राज्य की तत्कालीन आवश्यकताओं से आर्थिक लाभ उठाया तथा ऊपर की ओर गतिशील हो गईं। महाराष्ट्र की महार जातियों ने बटलर, कसाई तथा आया के रूप में काम कर नए आर्थिक अवसरों का लाभ उठाया और अपनी सामाजिक परिस्थिति में सुधार किया।

अनूसूचित जातियों में सामाजिक बदलाव और गतिशीलता का संकेत ग्रामीण एवं शहरी समाज में जातिगत तनावों एवं संघर्षों से मिलता है। अब निम्न जाति के लोग घृणित कामों को छोड़ने लगे तथा सवर्णों की अवज्ञा करने लगे हैं। उनमें आत्मसम्मान की भावना जगी है। इसके साथ–साथ वयस्क मताधिकार मिलने के कारण उनमें राजनीतिक जागरूकता आई है। अब वे बंधुआ मजदूरी तथा बेगार का काम नहीं करते हैं, परिणामस्वरूप जातिगत तनावों एवं संघर्षों की स्थिति बन गई है। अतः जातिगत हिंसा अनूसूचित जातियों की सामाजिक गतिशीलता की अभिव्यक्ति है। ये क्षैतिज गतिशीलता के उदाहरण हैं। पिछड़े वर्गों को संरक्षणात्मक भेदभाव के तहत उच्च–स्तरीय गतिशीलता का अवसर मिला जिसमें शैक्षिक संस्थाओं में सीटों का आरक्षण, निःशुल्क शिक्षा, छात्रवृत्ति इत्यादि शामिल हैं। इसके अलावा, इन वर्गों को सरकारी नौकरियों एवं वैधानिक संस्थाओं में भी आरक्षण दिया गया। वस्तुतः बीसवीं शताब्दी के आरंभ में पिछड़े वर्गों के आंदोलन का मुख्य उद्देश्य शिक्षा संबंधी रियायतों की मांग थी। यह आंदोलन मद्रास (चेन्नई), मैसूर और महाराष्ट्र में सबसे अधिक शक्तिशाली था जहां उच्च शिक्षा, व्यवसाय और सरकारी नौकरियों पर ब्राह्मणों का पूरा एकाधिकार था।[7] निम्न जातियों ने यह अनुभव किया कि केवल संस्कृतिकरण से उनके जीवन में सकारात्मक सुधार नहीं हो सकता है। नौकरियों में योग्यता के लिए अंग्रेजी माध्यम में शिक्षा को आवश्यक समझा गया। हालांकि अनुसूचित जाति के बड़े तबके तथा समूहों ने सामाजिक गतिशीलता हासिल की है। इसके अतिरिक्त, पिछड़े वर्ग तथा अन्य पिछड़े वर्गों में आरक्षण की नीति के कारण इनके अभिजनों के लघु समूहों के एक नए वर्ग का उदय हुआ है। ये लोग शिक्षित हैं, आर्थिक रूप से समृद्ध हैं तथा राजनीतिक रूप से मुखरित हैं। परंतु इन जातियों की बड़ी संख्या आज भी समाज के पिछड़े वर्ग का हिस्सा है।

सामाजिक गतिशीलता के महत्त्वपूर्ण घटक– जब भी समाज में सुधार किए जाते हैं गतिशीलता के अवसर उत्पन्न होते हैं। समाजशास्त्री सोरोकीन ने कहा है कि सामाजिक गतिशीलता के कुछ प्राथमिक घटक होते हैं जो सभी समाजों में गतिशीलता को प्रभावित करते हैं। इन घटकों में प्रमुख हैंः जनसंख्या, शिक्षा. सामाजिक परिवर्तन, औद्योगिकीकरण इत्यादि।

जनसंख्याः जनसंख्या किसी भी समाज की गतिशीलता को प्रभावित करती है। आज आयुर्विज्ञान एवं चिकित्सा पद्धति में विकास और वृद्धि हुई है। प्रायः ऐसा देखा गया है कि ऊंचे वर्गों में जन्मदर तथा मृत्युदर निम्न वर्गों की जन्मदर तथा मृत्युदर से कम होती है। ये सांख्यिकीय आंकड़े शहरी एवं ग्रामीण जनसंख्या के संबंध में भी सही हैं।

शिक्षाः किसी व्यक्ति की पात्रता निर्धारित करने वाले घटकों में शिक्षा एक महत्त्वपूर्ण घटक है। शिक्षा औद्योगिक एवं गैर–औद्योगिक समाजों में गतिशीलता बढ़ाने में प्रमुख भूमिका निभाती है। विशेषज्ञता एवं कार्य क्षमता के द्वारा व्यक्ति कार्य संचालन में सक्षम होता है। शिक्षा तथा प्रशिक्षण की सुविधाएं खुली होने के कारण गतिशीलता की गति तीव्र होती है। पारंपरिक समाजों में इस प्रकार की सुविधाएं विशेष क्षेत्रों में कुछ ही लोगों को मिलती थी जिससे सामाजिक गतिशीलता बाधित होती थी। शिक्षा रोजगार गतिशीलता का भी मार्ग प्रशस्त करती है। पिछड़े वर्गों में समतावादी मूल्यों के प्रसार और शिक्षा का स्तर ऊंचा उठने से वे न्यायोचित अपेक्षा और यथार्थ के बीच विद्यमान नकारात्मक विसंगति के बारे में जागरूक बने। चूंकि बच्चे तथा उनके माता–पिता के बीच एक दूरी होती है उनकी योग्यता समान नहीं होती है। बच्चे हमेशा अपनी वंशानुगत स्थिति के लिए उपयुक्त नहीं होते हैं। अतः वे अपनी योग्यता एवं प्रतिभा से उस स्थिति को बनाए रख सकते हैं या अच्छी स्थिति को प्राप्त कर सकते हैं। प्रतिभावान व्यक्ति का किसी न किसी रूप में आना लगा रहता है। ये नवआगंतुक अपनी प्रतिभा के बल पर रिक्त स्थिति को अपनाते हैं तथा इस समाज में समाहित हो जाते हैं। अपने पिता द्वारा दी गई स्थिति से ऊपर उठकर ऊर्ध्व गतिशीलता को प्राप्त करते हैं।[8]

सामाजिक परिवर्तनः सामाजिक वातावरण में परिवर्तन गतिशीलता के सबसे बड़े घटक के रूप में काम करता है। भारतीय समाज का रूपांतरण विभिन्न प्रक्रियाओं के द्वारा होता आ रहा है। भारत की रूपांतरण की प्रक्रिया को नगरीकरण, औद्योगिकीकरण, आधुनिकीकरण, संस्कृतिकरण, पश्चिमीकरण इत्यादि द्वारा देखा जा सकता है। भारत में दिन–प्रतिदिन ग्रामीण जनसंख्या का तेजी से नगरों की ओर पलायन हो रहा है। अनेक ग्राम एवं कस्बे नगरों में रूपांतरित हो रहे हैं। इसके साथ औद्योगिकीकरण एवं आधुनिकीकरण से व्यावसायिक शिक्षा का विकास, लोगों के जीवन के तरीकों में बदलाव, ज्ञान के स्तर का ऊंचा उठना तथा आर्थिक संपन्नता में प्रगति देखने को मिलती है। सामाजिक वैज्ञानिक एम. एन. श्रीनिवास ने संस्कृतिकरण एवं पश्चिमीकरण के द्वारा सामाजिक गतिशीलता को दर्शाने की कोशिश की है।

औद्योगिकीकरणः औद्योगिकीकरण ने गतिशीलता को सबसे अधिक प्रभावित किया है। पूर्व औद्योगिक स्थिति से औद्योगिक क्षेत्रों में गतिशीलता में वृद्धि दर्ज की गई है। औद्योगिक क्षेत्रों में गतिशीलता की दर एक समान हैं।[9] सोरोकीन के इन विचारों को भारत के विभिन्न औद्योगिक क्षेत्रों में अंधविश्वासों की कमी, धार्मिक कर्मकांडों में बदलाव तथा खुले समाज के वर्चस्व के रूप में रेखांकित किया जा सकता है। हालांकि औद्योगिकीकरण ने अनेक समस्याओं को जन्म भी दिया है। भारतीय समाज औद्योगिकीकरण में रूपांतरित हो रहा है।

परिणाम– समाज का निर्माण एक ऐसे विशिष्ट तरीके से हुआ है जिससे प्रत्येक व्यक्ति या समूह को अलग–अलग कार्य मिले हैं। प्रत्येक समाज के लिए उसमें रहने वाले व्यक्तियों द्वारा किए जाने वाले कार्य समाज के लिए महत्त्वपूर्ण होने के साथ–साथ उस व्यक्ति की स्थिति को भी दर्शाते हैं। कार्य के अनुसार ही व्यक्ति को समाज में उच्च या निम्न श्रेणी प्राप्त होती है। विभिन्न सामाजिक संरचनाओं पर सामाजिक गतिशीलता के भिन्न–भिन्न परिणाम होते है। सामाजिक गतिशीलता महत्त्वपूर्ण है क्योंकि लोगों को इसकी अपेक्षा होती है तथा इससे ऐसा अवसर मिलता है जिससे वे अपने जीवन में बदलाव लाते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. विपिन चंद्रा, आदित्य मुखर्जी एवं मृदुला मुखर्जी, 'आजादी के बाद का भारत (1947–2000), हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, पृ०–506.

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- II, Issues-40, YEAR- April-June 2026

2. ए०एम० खुसरो, इकोनोमिक हिस्ट्री ऑफ इंडिया 1857–1956, एलाइड पब्लिकेशन, दिल्ली, पृ०–85.
3. विपिन चंद्रा, आदित्य मुखर्जी, मृदुला मुखर्जी, op.cit. p. 548
4. बी० कुप्पुस्वामी, सोशल चेंज इन इंडिया, विकास पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, 1985. पृ०–192.
5. MN Srinivas, op. cit.
6. Ibid., p.
7. Sunanda Patvardhan, 'Change among India's harijan', Maharastra: A case Study, Orient Longman, 1973
8. बी० कुप्पुस्वामी, सोशल चेंज इन इंडिया, op.cit. p. 187
9. लिपसेट, सीमोर और वैन्डीकस, रीनहार्ड, सोशल मोबिलीटी इन इंडियन सोसायटी, बरेकली, यूनिवर्सिटी ऑफ कैलीफोर्निया प्रेस, 1959.

*****